साहित्य अकादेमी
महत्तर सदस्यता
SAHITYA AKADEMI
FELLOWSHIP

अमृता प्रीतम

AMRITA PRITAM

अमृता प्रीतम
AMRITA PRITAM

लब्धप्रतिष्ठ पंजाबी कवयित्री और कथा-लेखिका अमृता प्रीतम, जिन्हें साहित्य अकादेमी आज अपनी महत्तर सदस्यता से विभूषित कर रही हैं; संभवतः एकमात्र आधुनिक पंजाबी रचनाकार हैं जिन्होंने साहित्य रचना के क्षेत्र में अपने कलात्मक उत्कर्ष को निरंतर बनाए रखा है। विभाजन के पहले और बाद के उथल-पुथल के दौर में पंजाब में रहते हुए और तत्पश्चात् तेज़ी से बदलते सामाजिक और सांस्कृतिक युग को जीते हुए आपने अपने समय को अपनी रचनाओं में ईमानदारी से उतारा है और अपनी कविताओं, उपन्यासों और कहानियों द्वारा उन्हें स्वर दिया है। आपको पंजाबी साहित्य में आधुनिकतावाद की पुजारिन वैसे ही नहीं कहा गया। आपने पंजाबी लेखन से अपनी रचनाधर्मिता का शुभारंभ किया, लेकिन विभाजन के बाद दिल्ली आने पर आप हिन्दी में भी लिखने लगीं।

आपका जन्म 31 अगस्त 1919 को गुजराँवाला (अब पाकिस्तान) में हुआ। अपने विद्वान पिता के कुशल निर्देशन में आपने कविताएँ लिखनी शुरू कीं। आप आल इंडिया रेडियो (अब रेडियो लाहौर) से संबद्ध रहीं और बाद में 1938 में आप आकाशवाणी, दिल्ली में आ गईं।

आपकी प्रारंभिक कविताओं में, खासकर आपके पहले दो संग्रहों *ठंडियाँ किरना* (1935) और *अमृत लेहराँ* (1936) में, जीवन के प्रति एक पारंपरिक, सुविचारित और नैतिक दृष्टिकोण दिखाई पड़ता है। मार्क्सवादी विचारधारा की मानवतावादी अपील आपको एक नए ओर खुले स्पेस की ओर ले गई। परिवर्तन की तीव्र धारा में जीवन और उसके अनुभवों को एक स्त्री की दृष्टि से देखने ने आपकी रचनाओं को एक निश्चित दिशा दी। अपने वैयक्तिक जीवन के संघर्षों से आहत आपके हाथों में स्त्रीवाद एक देसी विषयवस्तु के रूप में विकसित हुआ। आपने लिखा है :

एक दुःख था, जिसे एक सिगरेट की तरह
मैंने ख़ामोशी से पी लिया

राख से गिर पड़ीं केवल कुछेक कविताएँ
जिसे मैंने झाड़ दिया था

पत्थर गीते (1946) की कविताओं के साथ आपकी कविता में विद्रोह का दृढ़ स्वर सुनाई पड़ता है।

विभाजन और उसके बाद जारी सांघातिक घटनाओं ने आपके सर्जनात्मक जीवन पर कठोर यथार्थवाद की समझ की छाप अंकित की। यद्यपि आपने सांप्रदायिक दंगों के लिए धार्मिक कट्टरतावाद और जनोन्माद को दोषी ठहराया, तथापि हमारे राष्ट्रीय इतिहास में आए विध्वंसात्मक बदलावों ने आपकी चेतना पर गहरे निशान छोड़े जो आपकी कई अविस्मरणीय कविताओं के रूप में प्रतिफलित हुए। उन दंगाग्रस्त दिनों में दिल्ली से देहरादून की रेल

Amrita Pritam, the most eminent Punjabi poet and fiction-writer on whom Sahitya Akademi is conferring its Fellowship today, is perhaps the only writer in modern Punjabi literature who has kept up an unmatched record of prolific output and artistic excellence. Living through the turbulent times in Punjab before and after Partition, and then through the fast-changing social and cultural milieu, she has responded honestly to her times and produced astounding results by way of her poems, novels and short stories. She can rightly be termed the high-priestess of Modernism in Punjabi literature. Having begun to write only in Punjabi, she later wrote in Hindi as well, after moving to Delhi following Partition.

Born on 31st August 1919 in Gujranwala (now in Pakistan), Amrita grew up writing poetry under the careful guidance of her scholarly father. She was associated with All India Radio (now Radio Lahore) and later, with AIR, Delhi in 1948.

Her early poems, especially those of her first two collections *Thandiyaan Kirna* (1935) and *Amrit Lehran* (1936) clearly show the patterns of a traditional, well-defined and ethical approach to life. The humanistic appeal of Marxian ideology led her to a new, open poetic space. Looking at life and its experiences from the woman's point of view in the context of strong currents of change gave a definite direction to her writings. Feminism developed as an indigenous theme in her hands, tempered as she became by setbacks in her personal and emotional life. She wrote:

There was a grief I smoked
in silence, like a cigarette

only a few poems fell
out of the ash I flicked from it.

With the poems of *Patthar Geete*,(1946) strong accents of protest emerged in her poetry.

The traumatic events leading up to Partition and continuing thereafter, stamped her creative life with a sense of hard realism. Though she blamed religious fanaticism and mass hysteria for the communal riots, the deep impressions the catastrophic turn in our national history left on her

यात्रा के दौरान लिखी गई 'तो वारिसशाह' कविता *क़िस्सा हीर-राँझा* की 18वीं सदी के निजंधरी कवि का आवाहन करती है, उसे उठ खड़े होने और उन हज़ारों हीरों के बारे में लिखने को प्रेरित करती है जिन्हें अपहृत कर लिया गया, जिनके साथ बलात्कार किया गया और जिन्हें मरता हुआ छोड़ दिया गया। अपनी कच्ची ऊर्जा के साथ यह कविता, आपकी उन रचनाओं में से एक सिद्ध हुई जिसने अमृता प्रीतम को अमर बनाया। अपनी अस्तित्वपरक नियति और सामाजिक पीड़न के ख़िलाफ़ स्त्री की चीख़ आपकी कविताओं में विभिन्न रूपों में दुर्लभ संवेदना और जीवंतता के साथ उभर कर आई है।

सुनेहुड़े आपकी पूर्ववर्ती कविताओं से अलग है। इसमें लेखिका के सृजनात्मक अनुभव में एक उल्लास भरे मौसम का आगमन और विचार एवं अभिव्यक्ति की जटिलता दिखाई पड़ती है। ये कविताएँ, जो प्रेम की ऐन्द्रिक अभिव्यक्ति हैं, 'धरती से अपना संपर्क खोए बग़ैर एक अलौकिक आभा' विकरित करती हैं। जीवन एक पूर्ण परिपक्व फल में 'विकसित होता है' जो अपनी परिपक्वता में गिरने के लिए तैयार है; और सौन्दर्य, जो अपनी स्वयं की दौलत को वहन पर पाने में असमर्थ है, 'उपयोग में लाए जाने के लिए वेदना विह्वल होता है।' प्रेम का कोमल और मधुर अनुभव लौकिक और अनुर्वर पर अधिकार कर लेता है। जो कुछ भी सामाजिक-राजनीतिक अर्थवत्ता इन कविताओं में है, वह सर्जनात्मक अभिप्रायों और रूपकों के साथ स्पंदित होती हैं। ये अमृता प्रीतम की कुछ उत्कृष्ट और अननुवादनीय कविताओं में से हैं।

कस्तूरी (1959) और *नागमणि* (1964) जैसे उनके परवर्ती संग्रहों की कविताओं में 'जीवन की उच्चतर संभावनाओं के लिए प्रयास' दिखाई पड़ता है। *काग़ज़ ते कैनवास* की कविताएँ 'तेज़ी से अमानवीकृत हो रहे युग' के परिप्रेक्ष्य में एक अनुभवातीत विश्वदृष्टि प्राप्त कर लेती हैं। 'गर्भवती' जैसी कविताएँ सुकुमार मनोभावों के साथ लेखन की सहज प्रविधियों से भलीभाँति सम्मिश्रित हैं। अपने 18 संकलनों के साथ एक कवि के रूप में अमृता प्रीतम का क़द अतुलनीय है। एक वरिष्ठ समालोचक के शब्दों में, "संभवतः किसी भी कवि के पास तारों, चंद्रमा, सूरज और आकाश की उतनी छवियाँ नहीं है जितनी अमृता प्रीतम ने अपने काव्य, सपनों और दृष्टि की कशीदाकारी पर बुनी हैं। आचार्य की बात नहीं कि अपनी एक अत्यंत सुंदर कविता में वह स्वयं को एक फुलकारी बुनती स्त्री के रूप में चित्रित करती हैं, प्रकाश की फुलकारी।"

आलोक से फटी हुई फुलकारी को कभी कौन सिएगा?
आसमान के गवाक्ष में सूर्य एक दीप जलाता है।
लेकिन मेरे दिल की मुँड़ेर पर
कभी कौन एक दिया जलाएगा?

एक कथा लेखिका के रूप में भी अमृता का महत्त्वपूर्ण स्थान है। अपने 31 उपन्यासों और 20 कहानी-संग्रहों के साथ आप आधुनिक पंजाबी कथा साहित्य की दुनिया को अप्रतिम रूप से विस्तीर्ण करती हैं। अपने उपन्यासों में आप अपने अनुभव विश्व को परस्पर विरोधी चरित्रों, स्थितियों, दृष्टिकोणों, संरचनाओं और अनुभव पैटर्न के साथ एक व्यापक फलक पर चित्रित करती है। वे कृतियाँ पीढ़ी-दर-पीढ़ी एक आनंदप्रद और प्रेरक पाठ बनी हुई हैं। ये उपन्यास अनूदित होकर सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं में उपलब्ध हैं और आधुनिकतावाद की स्पष्ट पुकार को प्रसारित करने में इनकी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। 'जलावतन' एक युवक की कहानी है जो अपनी उम्र के हिसाब से अधिक परिपक्व है और वह स्वयं को अपने ही लोगों के बीच अकेला पाता है तथा अपरिवर्तनीय रूप से त्रासदी में बहा ले जाया जाता है। इसे दैनिक जीवन के नितांत मूर्ख यथातथ्यवादियों के मध्य आदर्शवाद की

consciousness came out in the form of several memorable poems. "To Warish Shah", composed during a train journey from Delhi to Dehra Dun in those riot-torn days, invokes the legendary 18th century poet of *Kissa Heer-Ranjha,* exhorting him to arise and write about the millions of Heers abducted, raped, forsaken, dying and dead. This poem, with its raw energy, proved to be one of her early works that served to immortalise Amrita Pritam. The woman's cry against her existential fate and societal abuse breaks out in different forms in her poems of rare charm and vitality.

Sunehure marks a departure from her earlier poems, with the advent of a joyous season in the author's creative experience and a complexity of thought and expression. These poems, mostly sensuous outpourings on love, radiate "an unearthly glory without losing contact with the earth." Life blossoms into "a full-grown fruit ready to fall in its own ripeness" and beauty, unable to bear its own wealth, "aches to be consumed." The delicate and tender experience of love overtakes the mundane and the arid and whatever socio-political significances written into the poems pulsate with creative motifs and metaphors. Those were some of the best poems, and the least translatable, Amrita ever wrote.

In her poems in later collections like *Kasturi* (1959) and *Nagmani*(1964), her strivings for "the higher possibilities of life" are detected. The poems in *Kagaz Te Kanvas* acquire a transcendental worldview and vision in the face of "a fast-dehumanising epoch." Poems like "Garbhavati" exquisitely blend mellowed emotions with equally mellowed modes of writing. With 18 collections, Amrita Pritam's stature as a poet, is incomparable. A renowned critic writes in a tribute to Amrita: "No poet has perhaps as many images of stars, moon, sun and the sky as Amrita has woven into the embroidery of her poetry, dreams and vision. No wonder then, that in one of her exquisite poems she casts herself in the role of a woman embroidering a phulkari, a phulkari of light":

Who will ever stitch a torn phulkari of light?
In the niche of the sky the sun lights a lamp.
But who will ever light a lamp
on the parapet of my heart?

As a fiction-writer too, Amrita is equally eminent. With 31 novels and about 20 collections of short stories, she peerlessly spans the world of modern Punjabi fiction. In her novels, she portrays her experiential world on a wider canvas, with conflicting characters, situations, points of view, structures and patterns of experience. They make delightful and stimulating reading for generation and after generation. These novels, made available in translation in almost all major languages of India, played a crucial role in raising the clarion call of high-modernism. Her *Jala Vatan,* the story of a young man who is too mature for his age and finds himself alienated among his own people and invariably drifts into tragedy, can be seen as an allegory of the inescapable fate idealism comes to, among the crass pragmatists of quotidian life. *Uninja Din* powerfully portrays the resurrection of the